बहुजन और स्वराज

कृष्ण गांधी
24/06/2025

“बहुजन” शब्द की ज्ञानमीमांसा

“बहुजन” शब्द के क्या क्या अर्थ निकलते हैं? उसका उपयोग क्यों और कैसे होना चाहिए?

बहुजन (बहुवचन) का मतलब निम्न हो सकते हैं:

- सामान्य जन
- बहुसंख्यक जन
- सत्ता के बाहर के लोग
- मेहनतकश
- असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत गैर पेशेवर लोग
- सवर्ण जातियों को छोड़ अन्य सारी जातियां

बहुजन (एकवचन) का मतलब निम्न हो सकते हैं:

- सामान्य व्यक्ति
- सड़क का आदमी
- आम आदमी
- अंतिम व्यक्ति
- मेहनतकश वर्ग का व्यक्ति
- अवर्ण जाति का व्यक्ति

बहुजन शब्द के सर्वव्यापीकरण में समस्याएं हैं। भारतीय उपमहाद्वीप, दक्षिणी एशिया, या बौद्ध धर्म के प्रभाव वाले देशों को छोड़ अन्य कहीं बहुजन शब्द का सामान्य भाषा में प्रयोग की संभावना क्षीण है। उदाहरण केलिए यूरोप, उत्तर वो दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया आदि महाद्वीपों में बोली जानेवाली भाषाओं में बहुजन या समकक्ष शब्द ढूंढ निकलना कठिन होगा।

यह निर्विवाद है कि मानव जाति का विकास विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों, भाषाओं, समूहों के विकास के रूप में हुआ। ऐसे में, पूरे विश्व में स्वीकार्य ऐसा कोई शब्द गढ़ना बड़ा मुश्किल है, जिसका अर्थ सभी भाषाओं में बहुजन (“सामान्य जन” या “ordinary people”) निकलता हो।

यह भी विचारणीय है कि क्या हमें ऐसा कोई प्रयास करना भी चाहिए या नहीं। स्वराज की किसी भी चर्चा को आगे बढ़ाने केलिए क्या यह आवश्यक भी है? ऐसा प्रतीत होता है कि यह आवश्यक नहीं है। क्योंकि स्वराज की अवधारणा के अंतर्गत शब्दों या प्रतीकों का विश्वव्यापीकरण तर्क संगत नहीं है। फिर भी, विभिन्न देशों, भाषाओं, और संस्कृतियों की सीमायें लांघ कर परस्पर संवाद करने केलिए कुछ परा शब्दों (“meta words”) का प्रयोग हमें मजबूरी में करना पड़ता है। “बहुजन” और “अंतिम व्यक्ति” ऐसे दो परा शब्द हैं जिनका प्रयोग हम अपनी चर्चाओं में कर सकते हैं।

जुड़ा हुआ एक सवाल यहां सवाल उठता है: रंगभेद (apartheid) जैसे पहचानों पर आधारित बहिष्करण से ऊपर उठने का स्वराजीय मार्ग क्या है? आज दुनिया भर में ऐसे बहिष्करणों की एक बाढ़ सी आई हुई है। पूंजीवादी के असमान विकास और वैश्वीकरण के चलते बेहतर जीवनयापन की तलाश में बड़ी संख्या में लोग

आर्थिक रूप से संपन्न देशों में जा रहे हैं और अप्रवासी हो रहे हैं। लेकिन नए देशों में उन्हीं प्रकार के भेदभाव के वे शिकार हो रहे हैं जिस प्रकार के भेदभाव का शिकार अपने ही देश में होते रहे हैं। जाति, नस्ल, भाषा, संस्कृति, धर्म और लिंग पर आधारित बहिष्करण इन भेदभावों के मूल में हैं। पूरे विश्व की राजनीति ऐसे बहिष्करण वादी पहचानो के आधार पर जनता में फूट और द्वेष फैलाने पर केंद्रित होती जा रही है।

ज्ञान के क्षेत्र में भी बहिष्करण होता है। संगठित ज्ञान के केंद्र, जैसे विश्वविद्यालय, शोध संस्थान, चाहे वे आधुनिक हों या परंपरावादी, उनसे जुड़े विद्वानों विशेषज्ञों, और पंडितों का एक शक्तिशाली अल्पसंख्यक समूह असंगठित आम लोग अर्थात लोक विद्याधरों पर हावी होता है। और उनकी विद्या और ज्ञान, अर्थात लोकविद्या को किसी प्रकार की मान्यता देने से इनकार करता है।

ऐसी परिस्थिति में हमें एक ऐसे समावेशी शब्द गढ़ने की जरूरत है जो हर जगह आम लोग या साधारण जन का प्रतिनिधित्व करता हो। एक ऐसा शब्द जो सभी प्रकार के बहिष्करणों से परे हो, ऊपर उठता हो। संस्कृतियों और भाषाओं की सीमाओं लांघकर स्वराज से जुड़े संवादों को आगे बढ़ाने में यह मददगार होगा। शायद, बहुजन शब्द एक ऐसा शब्द है, जो ज्ञान समेत सभी प्रकार के बहिष्करणों से ऊपर उठता है। इसका मतलब है कि “बहुजन” की व्याख्या जाति, धर्म, नस्ल, भाषा, संस्कृति, सभ्यता, या क्षेत्र जैसे बहिष्करणवादी पहचान वाले लोगों के समूह के रूप में हम नहीं कर सकते हैं। बहुजन न स्वयं किसी प्रकार की विशिष्टता का दावा करते हैं, न ही उन्हें कोई विशिष्टता दी जा सकती है।

स्वराज का अस्तित्ववादी स्वरूप

स्वराजीय कल्पना में समूची मानव जाति, अर्थात सारे मानव समूहों का सर्व समावेशी महासमूह (grand ensemble), स्वायत्त इकाईयों से निर्मित होनेवाली एक महा स्वायत्त इकाई (autonomy of autonomies) का उदाहरण है। जैसा इंटरनेट को सारे नेटवर्कों का महानेटवर्क कहा जाता है। समूचे मानवजाति की इस स्वायत्त महा इकाई के भीतर केंद्र-परिधि विभाजन मौजूद नहीं है। जैसे पूरे ब्रह्मांड का कोई केंद्र नहीं है, और प्रत्येक स्थान से दिखाई देनेवाले दृश्य एक जैसे होते हैं। उसी प्रकार समूचे विश्व के विभिन्न राष्ट्रों, संस्कृतियों, और सभ्यताओं के बीच ऊंच नीच का कोई क्रम नहीं है। समूची मानव जाति की सतत विकास प्रक्रिया में किसी एक राष्ट्र, संस्कृति या सभ्यता की निर्णायक भूमिका नहीं होती है। इस सतत विकास प्रक्रिया का कोई पूर्व निर्धारित अंत नहीं है। अंत क्या होगा किसी को मालूम नहीं है, विभिन्न प्रकार के अंत संभव है, और उनमें से कौन सा अंत तक मानव जाति पहुंचेगी, यह मानव जाति के आज के कार्य और कार्यप्रणालियों पर बहुतेक निर्भर है।

इस अर्थ में भावी स्वराज-संपन्न समाज के निर्माण का कोई पूर्व निर्धारित ब्ल्यूप्रिंट नहीं है। हमारा भविष्य आज हम किस प्रकार के कार्य चुनते हैं इस पर निर्भर करेगा। भविष्य खुला है अर्थात पूर्व निर्धारित नहीं है। स्वराजीय दृष्टिकोण “साध्य बनाम साधन” (End versus Means) के द्वंद को नकारता है। स्वराजीय सोच में वर्तमान अर्थात साधन ही सब कुछ है। यदि हम वर्तमान सही तरीके से जिएंगे, सही कार्य करेंगे, न्याय त्याग भाईचारा के मूल्य अपनाएंगे, स्वराज अपनाएंगे, तो भविष्य अपने आप सही बनेगा, भविष्य निर्माण का कार्य अलग से करने की हमें जरूरत नहीं पड़ेगी। साध्य (भविष्य) हमारे साधन (वर्तमान) को तय करें यह विसंगति पूर्ण होगा। पूर्व निर्धारित भविष्य के अनुसार आज का कार्य करना वर्तमान की संभावनाओं को जन्म से पहले हत्या करना है। स्वराज कोई ऐसी चीज नहीं है जिसका खाका हमें पहले से तैयार करना है और उसे भविष्य में मूर्तरूप देना है। स्वराज हमेशा वर्तमान की सीमाओं में स्थित है, जिसका क्रियान्वयन आज और इस वक्त करने का है, और जो किसी दूरगामी लक्ष्य पर निर्भर नहीं है।

बेगमपुरा या अमरदेसा जैसे आदर्शलोक हमारे आज के कार्य तय करें, यह स्वराजीय सोच के विपरीत है। स्वराज संपन्न समाज की किसी भावी तस्वीर के अनुसार वर्तमान को ढालने की जगह, स्वराज के धम्म के अनुसार वर्तमान को जीना अधिक महत्वपूर्ण है। समाज के प्रत्येक स्तर पर स्वराज की पुरानी परंपराओं के

संवर्धन के साथ उनमें नए आयामों जोड़ने का निरंतर प्रयास होना चाहिए। बेगमपुरा या अमरदेसा जैसी कल्पनाएं अंतिमता (teleology) से प्रेरित कार्यों को जन्म देते हैं। ऐसे कार्यों में साध्य का साधन पर (भविष्य का वर्तमान पर) हावी होने का खतरा निहित है, जो हमें स्वराज के धम्म के विपरीत दिशा में ले जायेगा।

इस प्रकार स्वराज रोजमर्रे की हमारी जिंदगी का अभिन्न अंग है। व्यक्तिगत या सामाजिक, हर स्तर पर, हर परिस्थिति में, हर क्षण, स्वराज और गुलामी के बीच चुनने की चुनौती हमारे सामने रहेगी। उस चुनौती का सामना करने में हम किस हद तक सफल होंगे यह तय करेगा कि हम स्वराज के मार्ग पर अग्रसर होते हैं या नहीं। हमेशा इस बात का स्मरण करना है कि स्वराज एक मार्ग है, मंजिल नहीं।